28 / 10 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सौ ब्राह्मणों से उत्तम विशेष कुमारी बनने का अनुभव

➢➢ ब्रह्मा की संतान मैं आत्मा ब्रह्मा कुमार, कुमारी और अधर कुमारी...

➳ _ ➳ कुमारी शब्द पर गहराई से मनन करती हुई...

→ कुमारी अर्थात काम की अरि...

→ कामनाओं को जीतने वाली...

→ हद की कामनाओं से दूर...

→ बेहद में रहने वाली...

→ मन में एक बाप दूसरा न कोई...

→ विश्व कल्याण के निमित्त आत्मा...

→ सभी बन्धनों से मुक्त...

■ गहराई से अपनी चेकिंग करती हुई मैं आत्मा...

➳ _ ➳ वे कौन कौन से सूक्ष्म बंधन हैं,

➳ _ ➳ जो विशेष कुमारी बनने में अभी बाधक हैं...

→ देहधारियों से लगाव के सम्बन्ध..

→ हद की सेवाओं के बंधन...

→ नाम-मान की चाहना के बंधन...

→ मेरे अपने स्वभाव संस्कार के बंधन...

→ या फिर मेरी ही अपनी देह से लगाव के बंधन...

■ मैं आत्मा साक्षी होकर देख रही हूँ...

■ अपनी इस देह को...

➳ _ ➳ ये देह एक शोकेस हैं...

➳ _ ➳ मैं आत्मा इसमे रखा चमचमाता हीरा...

→ मैं इस देह से अलग हूँ...

→ मैं अशरीरी आत्मा हूँ....

→ मैं स्वतंत्र आत्मा हूँ...

■ आदि...

■ मध्य...

■ अंत में भी ...

■ मैं तीनों ही कालों में

■ अजर हूँ...

■ अमर हूँ....

➳ _ ➳ अमरता का एहसास भर कर मैं आत्मा...

➳ _ ➳ चल पड़ी सूक्ष्म वतन की ओर...

→ सूक्ष्म वतन में प्रकाश के...

→ सुनहरे लाल कमल पर...

→ विराजमान हैं बापदादा...

→ कमल की सुनहरी पंखुरियो से...

→ अष्ट शक्तियों की आभा चहुँ ओर फ़ैल रही हैं...

→ अष्ट पंखुरियों के विशाल कमल पर...

→ मुझे बैठने का इशारा करते हुए बाप दादा...

→ सुनहरे लाल रंग के कमल पर विराजमान मैं आत्मा...

→ शावर की तरह ये पंखुरियां...

→ सभी शक्तियों से मुझ आत्मा को नहला रही हैं...

→ साथ ही बाप दादा की आँखों से बरसती...

→ स्नेह और सहयोग की शक्तियां...

■ मैं आत्मा अतिन्द्रिय सुखों में डूब रही हूँ...

■ गहरे और गहरे...

→ मैं आत्मा भरपूर होती जा रही हूँ...

→ मैं त्याग मूर्त होती जा रही हूँ...

→ तपस्या मेरे रग-रग में समाँ रही है...

➳ _ ➳ मैं निर्बन्धन आत्मा, अब उड़ चली परधाम की ओर...

→ बीज रूप बनकर अपने सूक्ष्म संस्कारो को परिवर्तन करने...

■ मेरे सभी पुराने संस्कार भस्म हो रहें हैं...

■ मुझ आत्मा में दैवीय संस्कार इमर्ज हो रहें हैं...

■ केवल एक बाप की स्मृति से,

■ मैं विशेष कुमारी के अनुभव से भरपूर हो रही हूँ...

■ कल्प वृक्ष की सभी आत्माएं ...

■ मुझ आत्मा से लाइट-माईट ले रही हैं...